ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 211-213

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

काष्ठ हस्तशिल्प
(लकड़ी के खिलौनों के विशेष संदर्भ में)

राजेश कुमार पाल

असि0 प्रोफेसर– समाजशास्त्र विभाग, गोस्वामी तुलसीदास राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय– कर्वी, चित्रकूट (उ0प्र0), भारत

Received- 30.06.2020, Revised- 06.07.2020, Accepted - 11.06.2020 E-mail: dr.rajeshkumarpal@gmail.com

सारांश : *परम्परागत कला के रूप में प्रसिद्ध हस्तशिल्प ही एक ऐसा क्षेत्र है, जहाँ कलाकार अपने चिन्तन, मनोभावों और कल्पनाशीलता को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकता है। प्रस्तुत शोध–पत्र में काष्ठ हस्तशिल्प के अन्तर्गत लकड़ी के खिलौनों की स्थिति को दर्शाया गया है। यह शोध–पत्र उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के सीतापुर मुहल्ले में निवासरत हस्तशिल्पियों द्वारा निर्मित खिलौनों से सम्बन्धित है। परम्परागत रूप से इन खिलौनों का क्या महत्व था और वर्तमान में यान्त्रिक और प्लास्टिक के खिलौनों के आगे इनका क्या अस्तित्व है, इन्हीं सब बातों को इस शोध पत्र में दर्शाने की कोशिश की गयी है।*

कुंजीभूत शब्द– परम्परागत, हस्तशिल्प, कलाकार, निवासरत हस्तशिल्पियों, प्लास्टिक, अस्तित्व, कल्पनाशीलता ।

अति प्राचीन युग का विश्लेषण करने पर यह ज्ञात होता है कि हस्तषिल्प का गुण आदिमानव के विकास के साथ–साथ विकसित हुआ है। निश्चित ही हस्तकला की उत्पत्ति उस शांत एवं प्रकाशमय वातावरण में हुई, जहाँ समाज मनोरम प्रकृति के अधिक निकट था तथा उसके दिन–रात, परिवर्तित ऋतुओं के अनुभव से बंधे जीवन चक्र तथा वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए संस्कृति को विकसित करते थे। कला गतिविधियों में सदैव मुखरित होने वाली कुशलता, विशेषज्ञता एवं प्रवीण कलाकारों की गतिविधियाँ हस्तकला में स्तर को बनाये रखने के लिए प्रयत्न ही नहीं करती थीं, अपितु नये–नये प्रयोगों को प्रोत्साहित एवं संचालित भी करती थीं, अर्थात् सृजन ही हस्तकला का आधारभूत सिद्धांत है।

हस्तकला वह कला है जिसका गौरव कभी कम नहीं हुआ। इसका जादू हमेशा जनसाधारण के सिर चढ़कर बोला है। हस्तशिल्प कला पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलते हुए अपना अस्तित्व बरकरार रखे हुए है। परम्परागत कला के रूप में प्रसिद्ध हस्तशिल्प ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ कलाकार अपने चिन्तन, मनोभावों और कल्पनाशीलता को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकता है। यही नहीं हस्तशिल्प गाँवों के एक बड़े तबके को रोजगार मुहैया कराने का जरिया है। हस्तशिल्प प्राचीनकाल से ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का आधार रहे हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के ग्राम स्वराज की संकल्पना में हस्तशिल्प और ग्रामोद्योग भी अर्थव्यस्था के आधार थे। इस समय देश में एक अनुमान के अनुसार, 15 लाख से अधिक हस्तशिल्प इकाईयाँ कार्यरत हैं। इनमें से अधिकांश इकाईयाँ असंगठित क्षेत्र से हैं। यानी अधिकांश शिल्पकार अपने ही घरों से अपना व्यवसाय चलाते हैं। कुल मिलाकर यह परिवार केन्द्रित व्यवसाय है।

वर्तमान में हस्तशिल्प उद्योग को घरेलू और विदेशी बाजार में गंभीर प्रतियोगिताओं का सामना करना पड़ रहा है। हस्तशिल्प श्रमप्रधान उद्यम रहा है और यही इसकी सुन्दरता और विशिष्टता भी है, परन्तु बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ पूँजी प्रधान बनाकर हस्तशिल्प के स्वरूप को विस्तार कर रही हैं और मानवनिर्मित उत्पादों को इनकी प्रतिस्पर्द्धा में उतार रहीं हैं। इन मशीन निर्मित उत्पादों की प्रति इकाई कीमत कम होने के कारण बिक्री अधिक है और उसके सामने हस्तशिल्प पिछड़ रहे हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश के चित्रकूट जनपद के काष्ठ हस्तशिल्प पर आधारित है। काष्ठ हस्तशिल्प के अन्तर्गत यहाँ लकड़ी के खिलौने बनाये जाते हैं। यहाँ इन खिलौनों को बनाने वाले कारीगरों की संख्या सीमित है। इसलिए हमने अपने अध्ययन में समस्त कारीगरों या हस्तशिल्पियों को सम्मिलित करते हुए उनके द्वारा बनाये गये खिलौनों, उनकी माँग, उपयोगिता, कठिनाइयों एवं समस्यात्मक पहलुओं को वर्णनात्मक ढंग से व्यक्त करने का एक सूक्ष्म प्रयास किया है।

भगवान श्रीराम की तपोभूमि के नाम से विख्यात उत्तर प्रदेष का चित्रकूट जनपद प्राकृतिक सुन्दरता से ओतप्रोत है। यहाँ के दर्शनीय स्थल प्रकृति की गोद में बसे हुए हैं। यहाँ का बहुत सारा भाग वनाच्छादित है। यहाँ देश के कोने–कोने से लोग घूमने व दर्षन करने वर्ष भर आते रहते हैं। यहाँ की दुकानों में प्रभु श्रीराममय सामग्री के साथ–साथ तमाम कुटीर उद्योगों के हस्तनिर्मित उत्पाद भी मौजूद रहते हैं। इन्हीं उत्पादों में काष्ठषिल्प के अन्तर्गत लकड़ी के खिलौने हैं जो कुछ स्थानीय शिल्पकारों द्वारा

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

निर्मित किये जाते हैं।

चित्रकूट जनपद का सीतापुर मुहल्ला किसी समय लकड़ी के खिलौनों का प्रमुख केन्द्र था। पहले काफी लोग इस हस्तशिल्प से जुड़े हुए थे, परन्तु अब यह कला कुछ परिवारों तक सिमट कर रह गयी है। किसी समय इन खिलौनों की बहुत मांग थी, क्योंकि उस समय प्लास्टिक युग का प्रचलन नहीं था और ग्रामीणांचल में यही बच्चों के मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।

काष्ठ हस्तशिल्प के अन्तर्गत यहाँ के कारीगर कोरईया की लकड़ी से खिलौने बनाते हैं। इस लकड़ी को ये लोग दूधी भी कहते हैं। यह लकड़ी यहाँ के वनों से प्राप्त की जाती है। इस लकड़ी से ये कलाकार या हस्तशिल्पी चटुई, किटकिटा, डमरू, होलसी–बेलना, फिरिंगी या चकरी, मोर, बत्तखगाड़ी, गणेश जी, चूड़ी स्टैण्ड, झूमर, चिड़ियाघर, सिघौरी–सिघौरा, डिबिया, गुड़िया, मछली, किचेन सामग्री, तबला मास्टर, पालकी, कछुआ, पेन स्टैण्ड, सीताराम, मोटरगाड़ी इत्यादि तमाम चीजें बनाते हैं।

हस्तशिल्प में वहाँ की संस्कृति, स्थानीयता, ग्रामीणता व लोगों की भावनात्मकता के भी दर्शन होते हैं। जैसे चटुई नामक खिलौना नवजात शिशुओं के लिए होता है। ग्रामीणांचलों में महिलाओं के पास इतना समय नहीं रहता कि वे दिनभर शिशुओं की देखरेख कर सकें। ऐसी स्थिति में वे बच्चे के ज्यादा रोने या बार–बार दूध पिलाने की झंझट से बचने हेतु बच्चे को चटुई दे देती हैं। बच्चा चटुई को माँ का दूध समझकर पीता रहता है। चटुई में दोनों किनारे मोटे व बीच में पतली होती है। ग्रामीणों के अनुसार यह चटुई बच्चों के दाँत निकलने में भी सहायक है और लकड़ी से निर्मित होने के कारण इससे नुकसान भी नहीं होते।

बच्चों के खेलने का एक दूसरा खिलौना किटकिटा है। इसमें लकड़ी के एक छोटे से डंडेनुमा आकृति के अग्र भाग में दोनों तरफ एक–एक मूँगेनुमा संरचना धागे से बाँध दिये जाते हैं, जिसको हिलाने में किटकिट की आवाज होती है। इसी प्रकार एक अन्य खिलौना लकड़ी का डमरू भी है, जिसे बड़ी सुंदरता से अलंकृत किया जाता है।

खिलौनों की इसी श्रृंखला में छोटे बच्चों के लिए होलसी–बेलना है जिसे रंग बिरंगा बनाया जाता है। इसको बच्चियाँ अधिक पसंद करती हैं, जिसके माध्यम से वे खेल–खेल में घरेलू कार्य भी स्वतः सीख जाती हैं। फिरिंगी बच्चों का एक अन्य पसंदीदा खिलौना है, जिसे अंगुलियों के माध्यम से जमीन पर जोर से घुमाया जाता है और यह काफी देर तक जमीन पर घूमती रहती है। इसे स्थानीय भाषा में चकरी भी कहते हैं। बत्तखगाड़ी छोटे बच्चों का एक मनपसंद खिलौना है। यह बत्तख जैसे बनी होती है और नीचे पहिये लगे होते हैं। विभिन्न रंगों द्वारा इसे खूबसूरती प्रदान की जाती है। चिड़ियाघर भी बच्चों के खेलने का एक प्यारा खिलौना है। इसमें लकड़ी के एक गोल भाग के ऊपर कई छोटी–छोटी चिड़ियाँ बनाई जाती हैं, इसलिए इसे चिड़ियाघर कहते हैं। काष्ठ खिलौनों में लकड़ी की गुडिया, तबला मास्टर, पालकी भी महत्वपूर्ण हैं जो लकड़ी में विभिन्न आ.तियाँ प्रदान करते हुए निर्मित की जाती हैं। रंगों द्वारा इन्हें आकर्षक बनाने का प्रयत्न किया जाता है। पालकी जो किसी समय ग्रामीणांचलों में दुल्हन को विदा कराने का साधन थी, बड़ी ही सुंदर तरीके से बनायी जाती है। पालकी में दुल्हन को बिठाये हुए चलायमान मुद्रा में रूप देना बड़ा ही मनभावन प्रतीत होता है। यह अलग बात है कि आज की चकाचौंध में हम उस दृश्य को मन में नहीं ला पाते।

समय परिवर्तन एवं अपने को प्लास्टिक व यान्त्रिक खिलौनों की प्रतिस्पर्द्धा में बनाये रखने हेतु इन शिल्पकारों ने कुछ नये खिलौने जैसे मछली, मोटरगाड़ी, कछुआ भी बनाने प्रारम्भ किये हैं। भगवान राम एवं सीता की मूर्ति, गणेष जी की सुन्दर आकृति, मोर के इतराते हुए लकड़ी में चित्र इन हस्तशिल्पियों की लगन एवं कठिन परिश्रम को दर्शाते हैं। हस्तशिल्प के माध्यम से जीविकोपार्जन की सुदृढ़ता और आय के नये माध्यमों के लिए इन हस्तशिल्पियों ने लकड़ी के चूड़ी स्टैण्ड, पेन स्टैण्ड, झूमर, किचेन सामग्री जैसे कप, प्लेट, चम्मच, मथनी, कटोरी आदि भी बड़ी सुन्दरता से निर्मित करते हैं। सिघौरी–सिघौरा में सिंदूर भरा जाता है। ग्रामीण क्षेत्र में इसे सिंदूरदानी भी कहते हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

विवाह के समय इसका महत्व ज्यादा रहता है। इसी प्रकार अन्य अनेकानेक खिलौने बनाये जाते हैं। काफी पहले लकड़ी की तीन पहिया वाली गाड़ी भी बनायी जाती थी, जिसकी सहायता से बच्चे चलना सीखते थे। अब यह गाड़ी अवशेष मात्र रह गयी है और व्यक्ति विशेष की माँग पर ही निर्मित की जाती है।

काष्ठ हस्तशिल्प जिसके, अन्तर्गत हमने यहाँ लकड़ी के कुछ खिलौनों का वर्णन किया है, आज वह फीके पड़ते जा रहे हैं। यान्त्रिक और प्लास्टिक खिलौनों के अन्तहीन बाजार के आगे इन काष्ठ हस्तशिल्पियों व उनके द्वारा निर्मित उत्पाद के सामने अनेक कठिनाईयाँ, चुनौतियाँ एवं संकट हैं। हस्तनिर्मित खिलौनों की माँग दिनोंदिन घटती जा रही है और लागत बढ़ती जा रही है। लकड़ी की अनुपलब्धता, निर्माण कार्य में अधिक श्रम व मेहनत, खरीददारों की घटती संख्या, बाजारों में रौनकता का अभाव, प्लास्टिक खिलौनों की तुलना में मँहगा होना, ग्रामीणांचलों में यान्त्रिक व प्लास्टिक खिलौनों की पहुँच आदि कुछ ऐसे कारक हैं जिनकी वजह से काष्ठ हस्तशिल्प की यह उत्कृष्ठ कला दम तोड़ रहीं है। तमाम सरकारी योजनाएँ भी इनको स्थापित करने में असफल ही रही हैं। इसका सबसे बड़ा कारण लोगों द्वारा इन खिलौनों से निरन्तर दूर होते जाना है। पुरानी पीढ़ी के लोग परम्परागत विचारधारा के थे। उन्हें अपने लोगों व उनके द्वारा निर्मित मजबूत वस्तुओं से एक अपनत्व का भाव उजागर होता था, परन्तु आज की पीढ़ी यन्त्रवत हो गयी है। उन्हें ये खिलौने पिछड़े नजर आते हैं। यान्त्रिक व स्वचालित भौतिक सामग्री एवं प्लास्टिक खिलौनों का अम्बार लकड़ी के इन खिलौनों को निगलता जा रहा है। यही कारण है कि तमाम संस्थाओं से सम्मानित होने के बाद भी एक से एक कलाकार अपने घर में मायूस बैठे हैं। उन्हें अपनी इस कला को खो जाने का डर है, क्योंकि उसका हस्तांतरण अगली पीढ़ी में संचरित नहीं हो रहा है। हमें इन कला हस्तषिल्पियों के ज्ञान को बनाये रखना होगा। ये हमारी संस्कृति के परिचायक हैं। ये कला चिरस्थायी है। भौतिकता अल्पकालिक है हमें उसे पहचानना होगा। हम अपने बच्चों के लिए ऐसा वातावरण निर्मित करें जिससे उनका जीवन प्रकृतिमय एवं शान्तिमय हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हेमा गाँधी, हस्तशिल्प से रोजगार, कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, जुलाई, 2009.
2. सुधीश कुमार पटेल, बदलते दौर में हस्तकला, कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, जुलाई, 2009.
3. प्लास्टिक युग के आगे बौने लकड़ी के खिलौने, दैनिक जागरण, कानपुर संस्करण, 23 सितंबर, 2018.
4. प्राथमिक सर्वेक्षण।

*****